

मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का अध्ययन

चन्द्रेश्वर प्रसाद ^{1*}, डा.दीपा राणा ^{2**}

शोधार्थी ^{1*}, असिस्टेंट प्रोफेसर ^{2**}

स्कूल ऑफ एजुकेशन ^{1,2}, शोभित इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्जीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी

(डीमड-टू-बी यूनिवर्सिटी) मोदीपुरम (मेरठ)

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का अध्ययन किया गया है। शोध के न्यादर्श का चुनाव यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। न्यादर्श के रूप में कुल 100 छात्र एवं छात्राओं को ही चयनित किया गया है। शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के एकत्रीकरण हेतु शोधार्थी द्वारा निर्मित 'समायोजन मापनी एवं छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों' का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए टी-परीक्षण एवं सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया है। शोध परिणाम यह बताते हैं कि मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं का समायोजन समान है जबकि शैक्षिक उपलब्धि में भिन्नता पायी गयी है। शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन में धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

कुंजी शब्द— मूक बधिर विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन।

प्रस्तावना

शिक्षा मानवीय शक्ति के सर्वांगीण विकास का एक प्रभावी माध्यम है। यह न केवल व्यक्ति के बौद्धिक स्तर को ऊँचा उठाती है, बल्कि उसके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक पक्ष का भी समुचित विकास करती है। शिक्षा ही वह सशक्त माध्यम है जो व्यक्ति को जागरूक, उत्तरदायी एवं कर्मशील नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करती है। यही कारण है कि शिक्षा को व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति का मूल आधार माना गया है। जब व्यक्ति शिक्षित होता है तो वह समाज में सकारात्मक परिवर्तन का वाहक बनता है और इस प्रकार संपूर्ण राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है।

प्रस्तुत अध्ययन मेरठ जिले के मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं पर केन्द्रित है, जिसमें छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन के बीच के अन्तर एवं संबंधों का विश्लेषण किया गया है। यहाँ शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय उन अंकों से है जो विद्यार्थी द्वारा एक निश्चित सत्र में अध्ययन की गई कक्षा के मूल्यांकन उपरांत प्राप्त किए जाते हैं। अर्थात् एक छात्र ने वर्षभर जो अध्ययन किया है, उसका परिणाम परीक्षा में मिले अंकों के रूप में सामने आता है। यही प्राप्तांक उसकी शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निर्धारित करते हैं। यदि कोई छात्र निर्धारित कक्षा में 60 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करता है, तो उसे उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाला माना जाता है। इसके विपरीत, यदि छात्र के प्राप्तांक 60 प्रतिशत से कम हैं, तो उसकी उपलब्धि को निम्न श्रेणी में रखा जाता है। इस प्रकार शैक्षिक उपलब्धि न केवल विद्यार्थियों के ज्ञान और समझ के स्तर को दर्शाती है, बल्कि यह उनके समायोजन, आत्मविश्वास और सामाजिक व्यवहार से भी प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती है। अतः यह अध्ययन छात्र-छात्राओं की शैक्षिक प्रगति को समझने का प्रयास है।

यदि विद्यार्थी का पारिवारिक वातावरण कलहपूर्ण, अशांत अथवा अत्यधिक दबावयुक्त है, या वह आर्थिक रूप से पिछड़े हुए परिवार से संबंधित है, तो उसका अपने विद्यालयी जीवन तथा सहपाठियों से सामंजस्य स्थापित करना कठिन हो सकता है। विशेष रूप से तब, जब छात्र ग्रामीण पृष्ठभूमि से आता हो और उसका अध्ययन शहरी विद्यालय में हो, तो भाषा, व्यवहार, सामाजिक मानदंडों और जीवनशैली के अंतर के कारण उसे सामंजस्य स्थापित करने में अधिक कठिनाई का अनुभव हो सकता है। ऐसी स्थिति में वह स्वयं को अलग-थलग महसूस करता है, जिससे उसका आत्मविश्वास कमजोर पड़ता है और यह सीधा असर उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि विद्यार्थी के समायोजन की गुणवत्ता उसकी शैक्षिक सफलता से गहराई से जुड़ी होती है। यदि वह परिवेश से समरसता बिठाने में सफल होता है, तो वह न केवल बेहतर शैक्षिक परिणाम प्राप्त करता है, बल्कि मानसिक रूप से भी संतुलित और स्वस्थ रहता है। वहीं, कुसमायोजन की स्थिति उसकी शैक्षणिक उन्नति में बाधक बनती है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि परिवार, विद्यालय और समाज तीनों ही स्तरों पर ऐसे वातावरण का निर्माण किया जाए, जो किशोरावस्था के विद्यार्थियों के समायोजन को सहज बनाए और उनकी शैक्षिक प्रगति में सहायक सिद्ध हो।

यदि कोई बालक भावनात्मक रूप से कमजोर होता है, तो उसका संवेगात्मक समायोजन प्रभावित हो सकता है। अर्थात्, वह अपने भावों, इच्छाओं और मानसिक प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने में कठिनाई अनुभव करता है। ऐसा बालक छोटी-छोटी बातों पर अधिक विचलित हो सकता है, अनावश्यक तनाव या चिंता का अनुभव कर सकता है और कभी-कभी गुस्सा, डर या निराशा जैसी नकारात्मक भावनाओं से ग्रस्त हो सकता है। इस प्रकार की भावनात्मक अस्थिरता का सीधा असर उसकी शैक्षिक गतिविधियों पर पड़ता है। उसका ध्यान अध्ययन से हट सकता है, आत्मविश्वास कमजोर हो सकता है, और वह परीक्षा या कक्षा-कार्य में अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पाता। परिणामस्वरूप उसकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हो जाती है।

समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से जीव (व्यक्ति) अपनी आवश्यकताओं और उन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाले बाहरी वातावरण के बीच संतुलन स्थापित करता है। समायोजन वह निरंतर चलने वाली मानसिक और व्यवहारिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आंतरिक जरूरतों (जैसे— सुरक्षा, प्रेम, सम्मान, सफलता आदि) और बाहरी परिस्थितियों (जैसे— सामाजिक, पारिवारिक, विद्यालयी वातावरण) के बीच सामंजस्य स्थापित करता है।

जब कोई विद्यार्थी इस समायोजन प्रक्रिया में सफल रहता है, तो वह हर स्थिति में धैर्य और विवेक के साथ व्यवहार करता है, जिससे उसका मानसिक संतुलन बना रहता है और वह अपनी शैक्षिक गतिविधियों में पूरी एकाग्रता और मनोयोग से भाग लेता है। परंतु यदि यह समायोजन असफल हो जाए, विशेष रूप से संवेगात्मक समायोजन कृ तो विद्यार्थी के भीतर असुरक्षा, चिंता और असंतोष की भावना घर कर जाती है, जो न केवल उसके व्यवहार को प्रभावित करती है बल्कि उसकी शैक्षणिक प्रगति में भी बाधा उत्पन्न करती है।

इसलिए यह आवश्यक है कि बालकों के संवेगात्मक समायोजन को सुदृढ़ करने हेतु परिवार, विद्यालय और शिक्षकों का सहयोगात्मक रवैया हो, ताकि वे भावनात्मक रूप से संतुलित बनें और उनकी शैक्षिक उपलब्धि निरंतर उच्च स्तर पर बनी रह सके।

अतः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि समायोजन एक अत्यंत महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में निरंतर सक्रिय रूप से कार्य करती है। हर जीव, विशेष रूप से मनुष्य, अपने जीवन में किसी न किसी प्रकार की समस्याओं, दबावों और चुनौतियों का सामना करता है। किन्तु किसी व्यक्ति की प्रभावशीलता या उसकी जीवन-क्षमता इस बात से नहीं आँकी जाती कि उसे कितनी समस्याएँ हैं, बल्कि यह इस बात पर निर्भर करती है कि वह उन समस्याओं और जीवन की विविध परिस्थितियों का सामना किस प्रकार करता है।

इसलिए, समायोजन को एक गतिशील प्रक्रिया माना गया है, न कि कोई स्थिर अवस्था। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति को जीवन में निरंतर बदलती परिस्थितियों, परिवेश, संबंधों और अपेक्षाओं के अनुरूप स्वयं को ढालना होता है। यह प्रक्रिया जीवन पर्यंत चलती रहती है। व्यक्ति की मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक सफलता इसी बात पर निर्भर करती है कि वह इन परिवर्तनों के साथ किस प्रकार सामंजस्य स्थापित करता है।

इसलिए समायोजन केवल एक समस्या से निपटने का तरीका नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक कला है, जो व्यक्ति को आत्म-नियंत्रण, सहनशीलता, धैर्य और आत्मबल जैसे गुणों से संपन्न बनाती है। यह उसे न केवल व्यक्तिगत स्तर पर संतुलित बनाती है, बल्कि समाज में भी एक सहयोगी और उत्तरदायी नागरिक के रूप में प्रस्तुत करती है।

समस्या का औचित्य

मूक बधिर छात्र एवं छात्रायें समाज के उस विशेष वर्ग से संबंधित हैं जिन्हें सामान्य छात्र एवं छात्राओं की तुलना में शिक्षा प्राप्त करने में विशेष चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। श्रवण और वाणी बाधा के कारण इन छात्र एवं छात्राओं का न केवल संवाद स्थापित करने का माध्यम सीमित हो जाता है, बल्कि वे सामाजिक, मानसिक, भावनात्मक और शैक्षिक दृष्टि से भी अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त हो जाते हैं। इनकी शैक्षिक उपलब्धि और जीवन में समायोजन की क्षमता सामान्य बच्चों की तुलना में भिन्न और अधिक जटिल होती है, जिससे इनके समग्र विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

शिक्षा मानव जीवन का आधार है, जो व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और व्यावसायिक विकास में सहायक होती है। मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं को भी समान रूप से गुणवत्तापूर्ण और समावेशी शिक्षा की आवश्यकता होती है, ताकि वे अपनी क्षमताओं के अनुरूप जीवन में उन्नति कर सकें। किन्तु वास्तविकता यह है कि इन छात्र एवं छात्राओं के लिए शैक्षणिक वातावरण, शिक्षण विधियाँ, शैक्षिक संसाधन, शिक्षकों की दक्षता एवं सामाजिक समर्थन अक्सर अपर्याप्त होते हैं, जिससे इनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

इसी प्रकार, समायोजन मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के जीवन का एक अत्यंत संवेदनशील पहलू है। ये बच्चे अपने विद्यालय, सहपाठियों, शिक्षकों तथा पारिवारिक और सामाजिक परिवेश के साथ किस हद तक सामंजस्य स्थापित कर पाते हैं, यह उनकी मानसिक स्थिति, आत्मविश्वास, और शैक्षणिक प्रदर्शन को गहराई

से प्रभावित करता है। यदि मूक बधिर छात्र एवं छात्रायें अपने परिवेश से समायोजन नहीं कर पाते, तो उनमें आत्मग्लानि, अलगाव, हीन भावना तथा संप्रेषण की बाधाएं उत्पन्न होती हैं, जिससे उनका विकास अवरुद्ध हो सकता है।

इस समस्या के अध्ययन का औचित्य इस तथ्य में निहित है कि समाज में विशेष आवश्यकता वाले छात्र एवं छात्राओं की उपेक्षा लंबे समय से होती रही है। मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं की समस्याओं को पहचानना और उन्हें दूर करने हेतु प्रभावशाली उपाय सुझाना न केवल मानवीय दृष्टिकोण से आवश्यक है, बल्कि यह समावेशी शिक्षा प्रणाली की सफलता के लिए भी अनिवार्य है। यदि हम यह समझ पाते हैं कि मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि किन कारणों से प्रभावित हो रही है और उनके समायोजन में कौन-कौन से कारक बाधा बनते हैं, तो हम उनके लिए उपयुक्त शिक्षण रणनीतियाँ, संसाधन और समर्थन तंत्र विकसित कर सकते हैं।

इस प्रकार, मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के बीच के संबंधों का अध्ययन वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यक, प्रासंगिक और समाजोपयोगी है। यह विशेष छात्र एवं छात्राओं के लिए एक सशक्त, समावेशी और करुणाशील शिक्षण वातावरण सृजित करने में भी सहायक सिद्ध होगा।

समस्या कथन

मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का अध्ययन

शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

मूकबधिर छात्र एवं छात्रायें

प्रस्तुत अध्ययन में मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं से तात्पर्य उन विशेष छात्र एवं छात्राओं से है जो जन्मजात अथवा किसी कारणवश श्रवण शक्ति (सुनने की क्षमता) और वाणी शक्ति (बोलने की क्षमता) से वंचित हैं। ऐसे विद्यार्थी सामान्य संप्रेषण माध्यमों के द्वारा संवाद स्थापित करने में असमर्थ होते हैं, जिसके कारण उनके शैक्षिक, सामाजिक एवं मानसिक विकास में विशेष चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। ये छात्र एवं छात्रायें सामान्य विद्यालयों में अध्ययन करने में कठिनाई अनुभव करते हैं, अतः इनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मूक बधिर विद्यालयों की स्थापना की गई है।

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शैक्षिक कार्य का अन्तिम परिणाम है जो छात्र एवं छात्राओं के सीखने के बारे में अन्तिम जानकारी प्रदान करता है। प्रस्तुत अध्ययन में मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के वार्षिक परिणाम को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में लिया गया है।

समायोजन

लक्ष्य प्राप्ति के लिए व्यक्ति द्वारा अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थिति में वातावरण के साथ सामंजस्यपूर्ण व्यवहार समायोजन कहलाता है। प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन से तात्पर्य मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षिक व स्वास्थ्य सम्बन्धी समायोजन से है।

सम्बन्धित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

शोधार्थी द्वारा पूर्व में हुए शोध अध्ययन से सम्बन्धित आयामों जैसे समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित साहित्य की विवेचना की गई है—

कुशवाहा, सीमा एवं चन्देल, नरेश (2025) ने 'शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन' विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। प्रस्तुत अध्ययन शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र—छात्राओं की अभिवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि के पारस्परिक संबंध को समझने का प्रयास करता है। शोध में यह भी ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि क्या लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धियों में सार्थक अन्तर है तथा क्या अभिवृत्ति का शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव पड़ता है। शोध पत्र हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। ग्वालियर नगर के कुल 50 विद्यार्थियों को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है। विद्यार्थियों की अभिवृत्ति के लिए डा० टी.एस.सोढ़ी द्वारा विकसित सोढ़ी का अभिवृत्ति मानदंड का प्रयोग प्रमाणिक उपकरण के रूप में किया गया तथा वहीं शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों का पिछले वर्ष का परीक्षा परिणाम लिया गया है। निष्कर्षतः पाया गया कि छात्रों और छात्राओं के बीच अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई विशेष अन्तर नहीं है, तथा उनकी अभिवृत्ति का शैक्षिक उपलब्धि पर सीमित प्रभाव देखा गया। यह शोध शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी एवं समावेशी बनाने हेतु सुझाव प्रदान करता है।

कपूर, सुमिता (2024) ने 'समावेशी शिक्षा के अंतर्गत माध्यमिक स्तर पर सामान्य विद्यार्थियों एवं दिव्यांग (विशिष्ट) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। प्रस्तुत अध्ययन में समावेशी शिक्षा के अंतर्गत माध्यमिक स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का अनुप्रयोग करते हुए, न्यायिक के रूप में हाडौती क्षेत्र के कोटा संभाग (कोटा, बांरा, बूंदी, झालावाड, राजस्थान) के माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों का चयन सर्वेक्षण प्रश्नावली द्वारा किया गया तथा स्वशुल्क शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण एवं ए.के.पी. सिंह और आर.पी. सिंह की समायोजन सूची का प्रयोग करके परिणामों से यह निष्कर्ष निकाला गया कि सामान्य तथा दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन में अंतर होता है।

सैनी, रामप्रकाश (2023) ने 'मूक बधिर एवं अंध दिव्यांग किशोर छात्र—छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के सांख्यिकीय

विश्लेषण के लिए विश्लेषण अप्राचल की कोई वर्ग परीक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोधकर्ता ने अपने शोधकार्य को पूरा करने के लिए उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत संचालित उच्चतर समस्त उच्चतर माध्यमिक स्तर पर संचालित अन्ध विद्यालय तथा मूक बधिर विद्यालयों को जनसंख्या के रूप में चयन के साथ-साथ उन प्रशिक्षण विद्यालयों को भी जनसंख्या में शामिल किया गया है जिनमें उपरोक्त छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं। शैक्षिक उपलब्धि को जानने के लिए मान्यता प्राप्त समस्त बोर्डों के हाई स्कूल परीक्षा के परिणामों को आधार बनाया गया है। आकड़ों के विश्लेषण के उपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए— 1- मूक बधिर किशोर छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। 2- अन्ध विकलांग किशोर छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। 3- मूक बधिर किशोर छात्रों और अन्ध दिव्यांग किशोर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। 4- मूक बधिर किशोर छात्राओं और अन्ध दिव्यांग किशोर छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

त्रिपाठी, क्षमा एवं सिंह, पुष्पा (2022) ने 'उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के शालेय समायोजन स्तर का अध्ययन' विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। स्कूल समायोजन एक छात्र होने की भूमिका और स्कूल के वातावरण के विभिन्न पहलुओं के अनुकूल होने की प्रक्रिया है। समायोजन में विफलता मानसिक स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल और स्कूल छोड़ने का कारण बन सकती है, जिससे बचने के लिए विद्यार्थियों को परामर्श की आवश्यकता हो सकती है। वर्तमान अध्ययन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 163 बालक-बालिकाओं के शालेय समायोजन पर केंद्रित किया गया है जिसमें बालक-बालिकाओं के कुल समायोजन स्तर, शैक्षिक समायोजन स्तर, सामाजिक समायोजन स्तर एवं भावनात्मक समायोजन स्तर का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध इस बात की पुष्टि करता है कि विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर शालेय समायोजन स्तर एवं भावनात्मक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं है, लेकिन बालकों में सामाजिक समायोजन स्तर बालिकाओं की तुलना में उच्च है तथा बालिकाओं में शैक्षिक समायोजन बालकों की तुलना में उच्च है। अतः स्पष्ट है कि विद्यालय में बालकों को शैक्षिक समायोजन एवं बालिकाओं को सामाजिक समायोजन उच्च करने हेतु आवश्यक वातावरण प्रदान करने की आवश्यकता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
2. मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पना

1. मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक भिन्नता नहीं है।
2. मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक भिन्नता नहीं है।
3. मूक बधिर मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का सीमांकन

- 1- प्रस्तुत शोध अध्ययन मेरठ जिले में संचालित मूक बधिर विद्यालयों तक सीमित किया गया है।
- 2- प्रस्तुत शोध अध्ययन मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि तक सीमित किया गया है।

प्रस्तुत शोध की शोध विधि

वर्तमान शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा मूक बधिर विद्यालय में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के स्तर के अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मेरठ शहर में स्थिति मूक बधिर विद्यालय, 221, रेसकोर्स रोड़, मेरठ कैंट के छात्र एवं छात्राओं को ही चयनित किया गया। शोध में न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। प्रस्तुत शोध में 100 छात्र एवं छात्राओं को ही चयनित किया गया। जिसमें 50 छात्र एवं 50 छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा समायोजन सम्बन्धी प्रश्नावली एवं शैक्षिक उपलब्धि हेतु पूर्व वर्ष में परीक्षा के प्राप्तांकों का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि

आंकड़ों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है जिसमें माध्य, प्रतिशतांक तथा प्रतिशत का प्रयोग किया गया। इसके अतिरिक्त दो चरों के मध्य संबंध का विश्लेषण करने हेतु सहसंबंध गुणांक का उपयोग किया गया। चरों के संबंध की सार्थकता को 0.05 विश्वसनीयता स्तर पर परीक्षित किया गया।

विश्लेषण एवं विवेचन

निर्धारित उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के अनुरार परीक्षण में प्राप्त आँकड़ों का क्रमवार विश्लेषण निम्न प्रकार है—

परिकल्पना

1. मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका—1

मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन की तुलना

समायोजन	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी—मूल्य	सार्थकता स्तर
	छात्र	50	25.97	3.94	1.16	सार्थकता स्तर

	छात्रायें	50	25.07	3.85		0.05
--	-----------	----	-------	------	--	------

तलिका—1 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि मूकबधिर छात्रों के समायोजन से सम्बन्धित आंकड़ों में छात्रों का मध्यमान 25.97 तथा मानक विचलन 3.94 प्राप्त हुआ तथा छात्राओं से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान 25.07 तथा मानक विचलन 3.85 प्राप्त हुआ। मध्यमान का अवलोकन करने पर छात्राओं के समायोजन का मान निम्न पाया गया।

प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य 1.16 प्राप्त हुआ। जो सार्थकता के स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 98 पर सारणी में दिए गए टी— मूल्य के मान 0.05 पर 1.98 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना 'मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है' स्वीकृत की जाती है। विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में समानता होती है।

परिकल्पना

2. मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका—2

मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

शैक्षिक उपलब्धि	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी—मूल्य	सार्थकता स्तर
	छात्र	50	34.11	3.19	2.49	सार्थकता स्तर 0.05
	छात्रायें	50	35.67	3.07		

तलिका—2 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि मूकबधिर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित आंकड़ों में छात्रों का मध्यमान 34.11 तथा मानक विचलन 3.14 प्राप्त हुआ तथा छात्राओं से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान 35.67 तथा मानक विचलन 3.07 प्राप्त हुआ। मध्यमान का अवलोकन करने पर छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मान छात्रों की तुलना में उच्च पाया गया।

प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य 2.49 प्राप्त हुआ। जो सार्थकता के स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 98 पर सारणी में दिए गए टी— मूल्य के मान 0.05 पर 1.98 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना 'मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है। विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में समानता नहीं है।

परिकल्पना

3. मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन व उनकी शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन करना।

तालिका—3

मूक बधिर छात्र.—छात्राओं के समायोजन व उनकी शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन

समूह	चर	सह—सम्बन्ध गुणांक का मान
मूक बधिर छात्र एवं छात्राएँ	समायोजन	+ 0.3816
	शैक्षिक उपलब्धि	

तालिका—3 में समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह—सम्बन्ध गुणांक को दर्शाया गया है। तालिका का अवलोकन करने पर मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह—सम्बन्ध गुणांक का मान +0.3816 पाया गया। इस आधार कहा जा सकता है कि मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सह—सम्बन्ध है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना 'मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है' अस्वीकृत की जाती है। परिणाम के आधार पर हम कह सकते हैं कि मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है अर्थात् जिन मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं का समायोजन उच्च स्तर की होगा उनकी शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी उच्च होगा। अध्ययन द्वारा निम्न परिणाम प्राप्त हुये हैं— मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन व उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

परिणाम—

- मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया।
- मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन व उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

निष्कर्ष—

- प्रस्तुत अध्ययन में यह पाया गया कि मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं का समायोजन समान स्तर का है अर्थात् सभी को अध्ययन हेतु एक समान वातावरण प्रदान किया जा रहा है।
- प्रस्तुत अध्ययन में यह पाया गया कि मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि भिन्न—भिन्न है अर्थात् सभी छात्र एवं छात्राओं का अधिगम स्तर समान नहीं है।
- प्रस्तुत अध्ययन में यह पाया गया कि मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

- प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह ज्ञात होता है कि छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने हेतु उन्हें समय पर उचित मार्गदर्शन शिक्षण संस्थाओं द्वारा प्रदान की जानी चाहिए।
- प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह ज्ञात हुआ कि मूक बधिर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि स्तर को बढ़ाने हेतु निदानात्मक शिक्षण व उपचारात्मक शिक्षण कराया जाये ताकि वह प्रगति कर सके।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

- 1- कपूर, सुमिता (2024) 'समावेशी शिक्षा के अंतर्गत माध्यमिक स्तर पर सामान्य विद्यार्थियों एवं दिव्यांग (विशिष्ट) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन' आई.जे.सी.आर.टी. 2270-2882, वॉल्यूम-3 अंक-8, पृ. 112-119
- 2- कुशवाहा, सीमा एवं चन्देल, नरेश (2025) 'शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन' शोध समागम, आई.एस.एस.एन. 2581-6918, वॉल्यूम-8, अंक-2
- 3- केवट, आर. एन. (2009) 'समेकित शिक्षा के अंतर्गत सामान्य एवं विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन परिप्रेक्ष्य' न्यूपा, अंक-1, पृ. 109-113
- 4- पाण्डेय, बृजेश कुमार (2012) 'समावेशी शिक्षा' भारती पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, फैजाबाद।
- 5- सैनी, रामप्रकाश (2023) 'मूक बधिर एवं अंध दिव्यांग किशोर छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन' रिमार्किंग एन एसोसिएशन, आई.एस.एस.एन. P: 2394-0344, E: 2455-0817, वॉल्यूम-8, अंक-1
- 6- शर्मा, आर. ए. (2008) 'विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
- 7- त्रिपाठी, क्षमा एवं सिंह, पुष्पा (2022) ने 'उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के शालेय समायोजन स्तर का अध्ययन' शोध संगम, आई.एस.एस.एन 2581-6918 (E), 2582-1792 (P) वॉल्यूम-5, अंक-5